

## “जन माध्यमों द्वारा मानव तस्करी की प्रस्तुति और समाज में सजगता”

हरप्रीत कौर रीन<sup>1,\*</sup>, प्रो. (डॉ) मनीष कांत जैन<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी (पत्रकारिता और जनसंचार), एलएनसीटी यूनिवर्सिटी, भोपाल (मप्र)

<sup>2</sup>शोध पर्यवेक्षक, एलएनसीटी यूनिवर्सिटी, भोपाल (मप्र)

<https://doi.org/10.64175/wjmr.vol.3.issue1.5>

✉ [2jainmanishkant@gmail.com](mailto:2jainmanishkant@gmail.com)

### Article Info

#### Keywords:

- मानव तस्करी
- जन माध्यम
- मीडिया प्रस्तुति
- सामाजिक सजगता
- मध्यप्रदेश

### Abstract

मानव तस्करी समकालीन समाज की एक गंभीर सामाजिक एवं मानवाधिकार संबंधी समस्या है, जिसकी रोकथाम में समाज की सजगता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में जन माध्यम समाज में सजगता उत्पन्न करने का एक सशक्त साधन हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि जन माध्यम मानव तस्करी की घटनाओं को किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं तथा उनकी प्रस्तुति समाज में सजगता के स्तर को किस हद तक प्रभावित करती है।

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल नगर का चयन किया गया है। प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली के माध्यम से जनसामान्य से एकत्र किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आँकड़ों के अंतर्गत पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा चयनित मीडिया सामग्री का अध्ययन किया गया है। साथ ही, मानव तस्करी से संबंधित समाचारों एवं लेखों का सीमित कंटेंट विश्लेषण भी किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि समाज में मानव तस्करी के प्रति सामान्य स्तर की सजगता मौजूद है और इसमें जन माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। तथापि, मीडिया प्रस्तुति प्रायः घटनात्मक एवं अल्पकालिक पाई गई है, जिसमें विश्लेषणात्मक और रोकथाम-केंद्रित सामग्री का अभाव है। शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि जन माध्यम अधिक संवेदनशील, निरंतर और जागरूकता-उन्मुख भूमिका निभाएँ, तो समाज में मानव तस्करी के प्रति सजगता को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

### प्रस्तावना

मानव तस्करी आधुनिक समाज की एक गंभीर, जटिल और अमानवीय सामाजिक समस्या है, जो मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन के साथ-साथ सामाजिक संरचना को भी गहराई से प्रभावित करती है। यह समस्या केवल अपराध या कानून-व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक आयाम भी हैं। भारत जैसे विकासशील देश में गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, पलायन और सामाजिक असमानता जैसी परिस्थितियाँ मानव तस्करी को बढ़ावा देती हैं, जिससे समाज का कमजोर वर्ग विशेष रूप से प्रभावित होता है। समकालीन समाज में जन माध्यमों की भूमिका केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं रही है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया समाज की सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करने वाले सशक्त माध्यम बन चुके हैं। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में जन माध्यम समाज और शासन के बीच सेतु का कार्य करते हैं। मानव तस्करी जैसे संवेदनशील विषय पर जन माध्यमों की प्रस्तुति समाज में सजगता उत्पन्न करने, चेतना विकसित करने और सामाजिक विमर्श को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मानव तस्करी से संबंधित समाचारों, लेखों और कार्यक्रमों के माध्यम से जन माध्यम समाज को न केवल घटनाओं से अवगत कराते हैं, बल्कि तस्करी के तरीकों, जोखिम संकेतों, कानूनी प्रावधानों और रोकथाम के उपायों की जानकारी भी प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार

मीडिया की प्रस्तुति समाज में सतर्कता और जिम्मेदार नागरिक व्यवहार को विकसित करने का माध्यम बन सकती है। किंतु व्यवहारिक स्तर पर यह देखा गया है कि मानव तस्करी से संबंधित मीडिया कवरेज कई बार घटनात्मक, असंतुलित या सनसनीखेज रूप में प्रस्तुत होती है, जिससे समाज में सजगता के स्थान पर भय, भ्रम या उदासीनता उत्पन्न हो सकती है।

जन माध्यमों द्वारा मानव तस्करी की प्रस्तुति की प्रकृति, भाषा, संवेदनशीलता और निरंतरता समाज में सजगता के स्तर को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यदि मीडिया इस विषय को सामाजिक समस्या के रूप में गहराई और जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत करता है, तो समाज में जागरूकता और सहभागिता बढ़ सकती है। इसके विपरीत, यदि प्रस्तुति सतही या असंवेदनशील हो, तो मानव तस्करी जैसे गंभीर मुद्दे का सामाजिक प्रभाव सीमित रह जाता है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन जन माध्यमों द्वारा मानव तस्करी की प्रस्तुति का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि ऐसी प्रस्तुति समाज में किस प्रकार की सजगता उत्पन्न कर रही है। यह अध्ययन मीडिया की भूमिका, उसकी सीमाओं और संभावनाओं को रेखांकित करते हुए मानव तस्करी की रोकथाम के लिए अधिक प्रभावी मीडिया हस्तक्षेप की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

### शोध की आवश्यकता एवं महत्व

मानव तस्करी एक गंभीर सामाजिक एवं मानवाधिकार संबंधी समस्या है, जिसकी रोकथाम केवल कानूनी प्रावधानों या प्रशासनिक कार्रवाई तक सीमित नहीं हो सकती। इसके लिए समाज में सजगता और सतर्कता का विकसित होना आवश्यक है। समकालीन समाज में जन माध्यम जन-जागरूकता का सबसे प्रभावी साधन माने जाते हैं, अतः मानव तस्करी जैसे संवेदनशील विषय पर उनकी प्रस्तुति का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस संदर्भ में यह शोध आवश्यक हो जाता है कि यह समझा जा सके कि जन माध्यम मानव तस्करी को किस प्रकार प्रस्तुत कर रहे हैं और उनकी प्रस्तुति समाज में किस स्तर की सजगता उत्पन्न कर रही है।

इस शोध का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह जन माध्यमों की भूमिका को केवल सूचना प्रसार के स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और व्यवहार परिवर्तन के संदर्भ में विश्लेषित करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट किया जा सकेगा कि मीडिया की प्रस्तुति कितनी संवेदनशील, संतुलित और जागरूकता-उन्मुख है तथा उसमें कौन-सी सीमाएँ विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध मीडिया संस्थानों, पत्रकारों, नीति-निर्माताओं और सामाजिक संगठनों के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रदान कर सकता है, जिससे मानव तस्करी की रोकथाम हेतु अधिक प्रभावी और जिम्मेदार मीडिया हस्तक्षेप को प्रोत्साहन मिल सके।

### शोध प्रविधि

इस शोध में मानव तस्करी से संबंधित जन माध्यमों की प्रस्तुति तथा समाज में उत्पन्न सजगता का अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य मीडिया प्रस्तुति और सामाजिक सजगता के बीच संबंध को समझना एवं उसका विश्लेषण करना है।

इस शोध का अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश राज्य को रखा गया है, जिसमें भोपाल नगर को प्रतिनिधि क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है। भोपाल राज्य की राजधानी होने के साथ-साथ प्रशासनिक, शैक्षणिक और मीडिया गतिविधियों का प्रमुख केंद्र है, इसलिए इसे अध्ययन क्षेत्र के रूप में उपयुक्त माना गया है।

इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े भोपाल नगर के जनसामान्य के बीच प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए हैं, जिससे मानव तस्करी के प्रति सजगता और मीडिया की भूमिका का आकलन किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के अंतर्गत पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा चयनित समाचार पत्रों एवं डिजिटल मीडिया में प्रकाशित मानव तस्करी से संबंधित समाचारों एवं लेखों का अध्ययन किया गया है।

इसके अतिरिक्त, मीडिया प्रस्तुति के स्वरूप को समझने हेतु सीमित कंटेंट एनालिसिस विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश में प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रों तथा डिजिटल मीडिया में मानव तस्करी से संबंधित चयनित सामग्री का विश्लेषण किया गया है।

इस प्रकार, अध्ययन क्षेत्र भोपाल/मध्यप्रदेश को केंद्र में रखते हुए, सीमित एवं उपयुक्त शोध प्रविधियों के माध्यम से जन माध्यमों द्वारा मानव तस्करी की प्रस्तुति और समाज में सजगता का समग्र अध्ययन किया गया है।

### जनसंख्या एवं नमूना निर्धारण

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल नगर में निवास करने वाला 18 वर्ष या उससे अधिक आयु का जनसामान्य सम्मिलित किया गया है। यह जनसंख्या मानव तस्करी से संबंधित जन माध्यमों की प्रस्तुति से प्रभावित होने वाली सामाजिक इकाई का प्रतिनिधित्व करती है।

शोध को व्यवहारिक और सीमित दायरे में रखने के उद्देश्य से भोपाल नगर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया है। राजधानी होने के कारण भोपाल में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल जन माध्यमों की सक्रिय उपस्थिति है, जिससे यह क्षेत्र अध्ययन के लिए उपयुक्त माना गया है।

इस शोध में नमूना (Sample) के रूप में भोपाल नगर के विभिन्न क्षेत्रों से 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। नमूना चयन के लिए सरल यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया है, ताकि प्रत्येक उत्तरदाता को समान अवसर प्राप्त हो सके और निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय बन सकें।

नमूना निर्धारण में यह ध्यान रखा गया है कि उत्तरदाताओं में लिंग, आयु वर्ग, शैक्षिक स्तर एवं निवास क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) का संतुलित प्रतिनिधित्व हो, जिससे अध्ययन के निष्कर्ष व्यापक और संतुलित रूप में प्रस्तुत किए जा सकें।

इस प्रकार, निर्धारित जनसंख्या एवं चयनित नमूना अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पर्याप्त और उपयुक्त है।

## परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका-1 : उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय स्थिति

श्रेणी	विकल्प	प्रतिशत (%)
आयु वर्ग	18-30 वर्ष	38
	31-45 वर्ष	34
	46 वर्ष से अधिक	28
लिंग	पुरुष	56
	महिला	44
निवास क्षेत्र	शहरी	62
	अर्ध-शहरी/ग्रामीण	38

विश्लेषण:

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में विभिन्न आयु वर्ग, लिंग और निवास क्षेत्रों का संतुलित प्रतिनिधित्व है, जिससे मीडिया प्रस्तुति और सामाजिक सजगता से जुड़े निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय बनते हैं।

तालिका-2 : मानव तस्करी के प्रति समाज में सजगता का स्तर

कथन	सहमत (%)	आंशिक सहमत (%)	असहमत (%)
मानव तस्करी एक गंभीर सामाजिक समस्या है	74	18	8
यह समस्या मध्यप्रदेश में भी मौजूद है	69	21	10
मीडिया ने मेरी समझ बढ़ाई है	58	27	15

विश्लेषण:

अधिकांश उत्तरदाता मानव तस्करी को गंभीर समस्या मानते हैं। यह दर्शाता है कि समाज में बुनियादी सजगता विद्यमान है, जिसमें मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण लेकिन पूर्ण नहीं है।

तालिका-3 : मानव तस्करी संबंधी जानकारी के प्रमुख जन माध्यम

जन माध्यम	प्रतिशत (%)
टेलीविजन समाचार	36
समाचार पत्र	24
डिजिटल/सोशल मीडिया	30
रेडियो/अन्य	10

विश्लेषण:

तालिका से स्पष्ट है कि टेलीविजन और डिजिटल मीडिया मानव तस्करी संबंधी जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं, जो दृश्य एवं त्वरित माध्यमों की प्रभावशीलता को दर्शाता है।

तालिका-4 : जन माध्यमों की प्रस्तुति का स्वरूप

प्रस्तुति का प्रकार	प्रतिशत (%)
केवल घटनात्मक	55
आंशिक विश्लेषणात्मक	28
सजगता/रोकथाम केंद्रित	17

विश्लेषण:

अधिकांश मीडिया सामग्री घटनात्मक पाई गई है। सजगता और रोकथाम पर केंद्रित प्रस्तुति का प्रतिशत कम होना मीडिया की एक प्रमुख सीमा को दर्शाता है।

तालिका-5 : मीडिया प्रस्तुति की संवेदनशीलता का आँकलन

विकल्प	प्रतिशत (%)
संवेदनशील	32
आंशिक रूप से संवेदनशील	44
असंवेदनशील	24

विश्लेषण:

यह तालिका दर्शाती है कि मीडिया की प्रस्तुति को अधिकतर उत्तरदाता आंशिक रूप से संवेदनशील मानते हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि सुधार की पर्याप्त संभावना मौजूद है।

तालिका-6 : मीडिया प्रस्तुति का समाज पर प्रभाव

कथन	हाँ (%)	नहीं (%)
मीडिया से सतर्कता बढ़ी है	61	39
संदिग्ध गतिविधियों के प्रति ध्यान बढ़ा	54	46
रोकथाम की जानकारी मिली	47	53

विश्लेषण:

मीडिया प्रस्तुति से समाज में सतर्कता तो बढ़ी है, किंतु रोकथाम संबंधी व्यावहारिक जानकारी अभी भी अपर्याप्त पाई गई है।

तालिका-7 : मीडिया प्रस्तुति और सामाजिक सजगता के बीच संबंध (Chi-Square Test)

चर	$\chi^2$ मान	df	p-value	परिणाम
मीडिया प्रस्तुति का स्तर × सजगता स्तर	12.84	4	0.012	सार्थक

विश्लेषण:

p-value (0.012) < 0.05 होने के कारण यह निष्कर्ष निकलता है कि जन माध्यमों की प्रस्तुति और समाज में सजगता के स्तर के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध है। यह शोध परिकल्पना को समर्थन प्रदान करता है।

तालिका-8 : मीडिया उपयोग की आवृत्ति और सजगता के स्तर के बीच सहसंबंध

(Correlation Test)

चर	सहसंबंध गुणांक (r)	संबंध की दिशा	निष्कर्ष
मीडिया उपयोग × सजगता स्तर	0.46	धनात्मक	मध्यम सहसंबंध

विश्लेषण:

सहसंबंध गुणांक ( $r = 0.46$ ) यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे मीडिया उपयोग बढ़ता है, समाज में मानव तस्करी के प्रति सजगता का स्तर भी बढ़ता है। यह संबंध मध्यम और सकारात्मक पाया गया है।

तालिका-9 : शहरी एवं ग्रामीण उत्तरदाताओं की सजगता में अंतर

(t-Test)

समूह	औसत सजगता स्कोर	t-मान	p-value	परिणाम
शहरी	3.82	2.31	0.023	सार्विक अंतर
ग्रामीण	3.41			

विश्लेषण:

p-value (0.023) < 0.05 होने से यह स्पष्ट होता है कि शहरी और ग्रामीण उत्तरदाताओं की सजगता में सांख्यिकीय रूप से सार्विक अंतर है। शहरी उत्तरदाताओं में सजगता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

तालिका-10 : मीडिया प्रस्तुति की संवेदनशीलता और रोकथाम व्यवहार के बीच संबंध

(Chi-Square Test)

चर	$\chi^2$ मान	df	p-value	निष्कर्ष
संवेदनशील प्रस्तुति × रोकथाम व्यवहार	9.67	3	0.021	सार्विक

विश्लेषण:

यह परिणाम दर्शाता है कि संवेदनशील मीडिया प्रस्तुति का समाज के रोकथाम-संबंधी व्यवहार पर सकारात्मक और सार्विक प्रभाव पड़ता है।

तालिका-11 : विभिन्न जन माध्यमों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण

(Mean Score Analysis)

जन माध्यम	औसत प्रभाव स्कोर
टेलीविजन	3.78
समाचार पत्र	3.42
डिजिटल/सोशल मीडिया	3.65

विश्लेषण:

तालिका से स्पष्ट है कि टेलीविजन और डिजिटल मीडिया मानव तस्करी के प्रति सजगता उत्पन्न करने में समाचार पत्रों की तुलना में अधिक प्रभावी पाए गए।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मानव तस्करी एक गंभीर सामाजिक एवं मानवाधिकार संबंधी समस्या है, जिसके प्रति समाज में बुनियादी स्तर की सजगता मौजूद है। इस सजगता के निर्माण में जन माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, विशेष रूप से टेलीविजन और डिजिटल मीडिया ने सूचना प्रसार में प्रभावी योगदान दिया है। अध्ययन से यह भी प्रमाणित हुआ है कि मीडिया प्रस्तुति और समाज में सजगता के स्तर के बीच सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि जन माध्यमों द्वारा मानव तस्करी की प्रस्तुति प्रायः घटनात्मक और अल्पकालिक पाई गई है। विश्लेषणात्मक, संवेदनशील और रोकथाम-केंद्रित सामग्री का अभाव समाज में दीर्घकालिक सजगता और व्यवहार परिवर्तन को सीमित करता है। मीडिया की प्रस्तुति को अधिकांश उत्तरदाताओं ने आंशिक रूप से संवेदनशील माना है, जिससे यह संकेत मिलता है कि प्रस्तुति की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है।

सांख्यिकीय परीक्षणों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि मीडिया उपयोग की आवृत्ति बढ़ने के साथ समाज में सजगता का स्तर भी बढ़ता है तथा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सजगता में स्पष्ट अंतर पाया गया है। यह अंतर मीडिया की पहुँच और उपलब्धता से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। समग्र रूप से अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि जन माध्यम समाज में सजगता उत्पन्न करने में सक्षम हैं, किंतु उनकी भूमिका को और अधिक संरचित, संवेदनशील और उद्देश्यपरक बनाए जाने की आवश्यकता है।

## सुझाव

- जन माध्यमों को मानव तस्करी से संबंधित कवरेज में घटनात्मक रिपोर्टिंग के साथ-साथ विश्लेषणात्मक और समाधान-उन्मुख प्रस्तुति को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे समाज में दीर्घकालिक सजगता विकसित हो सके।
- मानव तस्करी से संबंधित समाचारों एवं कार्यक्रमों में संवेदनशील भाषा और नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि पीड़ितों की गरिमा और गोपनीयता बनी रहे।
- रोकथाम से जुड़ी व्यवहारिक जानकारी—जैसे हेल्पलाइन नंबर, कानूनी प्रावधान और रिपोर्टिंग प्रक्रिया—को मीडिया सामग्री में नियमित रूप से शामिल किया जाना चाहिए, जिससे समाज सक्रिय भूमिका निभा सके।
- डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का नियोजित एवं जिम्मेदार उपयोग किया जाना चाहिए, विशेषकर युवाओं और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाने के लिए।
- मीडिया संस्थानों में पत्रकारों के लिए मानव तस्करी जैसे संवेदनशील विषयों पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि प्रस्तुति अधिक संतुलित और सामाजिक रूप से उत्तरदायी हो।
- ग्रामीण और कम-साक्षर क्षेत्रों में स्थानीय भाषा आधारित मीडिया सामग्री को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे सजगता का दायरा व्यापक हो सके।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्र, योगेश कुमार. (2015). भारतीय समाज में मानवाधिकार. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. तिवारी, एस. (2019). मीडिया और सामाजिक अपराधों की रोकथाम. मीडिया अनुशीलन, 7(1), 60–72।
3. यादव, एल. (2017). मानवाधिकार उल्लंघन और मीडिया की जिम्मेदारी. मानवाधिकार समीक्षा, 4(2), 41–53।
4. पत्रिका. (2021, 14 जनवरी). मानव तस्करी: कानून है, जागरूकता नहीं।
5. बीबीसी हिंदी. (2020, 9 दिसंबर). भारत में मानव तस्करी: आंकड़ों के पीछे की सच्चाई।
6. McQuail, D. (2010). McQuail's mass communication theory (6th ed.). Sage Publications.
7. Schramm, W. (1964). Mass media and national development. Stanford University Press.
8. Tiefenbrun, S. (2011). Human trafficking: International perspectives. Carolina Academic Press.
9. Chandra, S. (2017). Human trafficking in India: Causes and consequences. Indian Journal of Social Work, 78(3), 345–360.

10. Gupta, N. (2019). Role of media in creating awareness against human trafficking. *Journal of Media Studies*, 11(2), 45–58.
11. Roy, A. (2020). Media ethics and reporting of human trafficking. *Journal of Media Ethics*, 35(2), 89–101.
12. Patel, M. (2016). Content analysis of Indian newspapers on human trafficking. *Journal of Content Analysis*, 4(1), 55–69.